आनन्द मार्ग

केसरिया पिशाच

नवल किशोर

आनन्द मार्ग

केसरिया पिशाच

नवल किशोर

श्री नवल किशोर आनन्द मार्ग के एक भूतपूर्व आचार्य और कापालिक हैं। वे 1958 में आनन्द मार्ग में शामिल हुए और संगठन की राजनीतिक शाखा में पूर्णकालिक कार्यकर्ता थे। वह प्राउटिस्ट ब्लाक आफ इंडिया के वित्त सचिव तक बन गए थे। कुछ वर्षों के बाद वे आनन्द मार्ग की गैर कानूनी और हिंसात्मक गतिविधियों से परिचित हो गए जो अत्यन्त गोपनीय होती थी। 1971 में उन्होंने संगठन को लात मार दी।

इतिहास के पन्नों में अपने को अफलातून समझने वाले कई ऐसे पाखंडियों के नाम कुलबुला रहे है जिन्होंने अपनी कुत्सित आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए निरीह प्राणियों को अपने प्रपंच में लपेट लिया। जब इन रंगे सियारों को भेड़ स्वभाव वाले अंधानुयायी मिल गए तो इनके मिजाज और चढ़ गए। अपना कपट जाल बिछाते समय ये पिशाच निकृष्टतम हथकंडे अपनाने से भी नही चूके। भारत जैसे देश में भेड की खाल में छिपे इन भेड़ियों ने आध्यात्मिकता का बाना ओढ़ लिया जो लोगों पर जादू चलाने का एक सरल साधन है। अगर ऐसे पाखंडियों की धार्मिक कपट लीला में शक्ति लोलुपता का जहर और घोल दिया जाए तो इसके परिणाम कितने भयावह हो सकते हैं, यह कल्पना की जा सकती है।

प्रभात रंजन सरकार उर्फ 'आनन्द मूर्ति' परन्तु वास्तव में वीभत्स मूर्ति ऐसे ही अपराधियो मे से एक है, जो रेलवे की जमालपुर वर्कशाप में मामूली क्लर्क था और जिसने मोरी की ईंट चौबारे चढ़ने जैसा ख्वाब देख कर करोड़ों भारत-वासियों का सम्राट बनने की कल्पनाएं सजो डाली।

कपोल कल्पनाएं और किवंदतियां

प्रभात रंजन का जन्म 1 अप्रैल, 1923 को हुआ था। वह लक्ष्मी नारायण सरकार का सबसे बड़ा बेटा था। वह रेलवे वर्कशाप में एक अकाउन्ट्स क्लर्क था। उसके पिता ने उसके जन्म से पहले ही एक खराती होम्योपैथिक दवाखाना खोल रखा था इस लिये उसे काफी लोग जानते थे। अभी प्रभात रंजन सरकार पढ़ ही रहा था कि उसका पिता दुनिया से कूच कर गया। प्रभात रंजन ने भी रेलवे वर्कशाप में एकाउन्ट्स क्लर्क का काम शुरू कर दिया। जैसे कि अक्सर बहुत से नीम हकीमों के साथ होता है उसके बारे में भी तरह तरह की कपोल कल्पनाएं फैला दी गईं।

प्रभात रंजन के कुछ कितने साथियों ने यह प्रचार कर दिया कि जब 'आनन्द मूर्ति' जी सिर्फ चार ही वर्ष के थे तो बड़े जटिल और दुरूह शिव मन्त्र किसी दिव्य

शक्ति ने उन्हें कंठस्थ करा दिए। उसके गुर्गों ने इस बचकाना कहानी के जगह जगह ढोल पीट दिए कि किस तरह एक शिकारी आश्चर्य चकित रह गया जब उसने देखा कि एक भयानक बाघ एक ऊंची पहाड़ी पर चढ़ा जा रहा है और एक बालक उसकी पीठ पर बैठा है; यह बालक प्रभात रंजन सरकार ही था। एक और मजेदार गप्प जो उसके बारे में उड़ाई गई वह थी कि जमालपुर में एक भयंकर तूफान आया, तूफान की उफनती लहरें एक नन्हे बालक को अपनी बाहों में लपेट कर कई मील दूर गंगा के किनारे पर ले गईं। वहां 'आनन्द मूर्ति' की साक्षात शिव से भेंट हुई। ये बे सिर पैर की गप्प इस तरह फैलाई गई मानो ये सत्य घटनायें हों और इनमें एक और प्रसंग जोड़ दिया गया कि 'आनन्द मूर्ति' जी कहते हैं कि उनके जीवन की अलौकिकताओं का बखान न किया जाए। इस सब का आशय था रहस्य और धर्मांधता तथा पाखंड का रंग इतना चढ़ जाए कि भक्त लोगों में उसकी दिव्यता की धाक जम जाए।

एक और बकवास उसकी जन्मकुन्डली के बारे में की गई है। यह कथा घड़ी गई कि प्रभात रंजन के जन्म पर जन्मपत्री बनाने वाले पंडितों ने भविष्यवाणी की कि 'इस बालक में राजा बनने के गुण हैं लेकिन एक साधु बनेगा।' असल में भारत में हर लड़के की पैदायश पर ऐसी ही भविष्यवाणी की जाती है जिससे कि पंडित लोग उसके माता पिता से ज्यादा से ज्यादा पैसा ऐंठ सकें।

एक और कहानी भी है। रेलवे का एक अधिकारी अपनी पत्नी के बारे में बड़ा चिंतित रहता था, जिसका इंगलैण्ड में इलाज चल रहा था। वह गम्भीर रूप से बीमार थी और डाक्टर सही से रोग की जड़ नहीं पकड़ पा रहे थे। आनन्द मूर्ति ने कुछ क्षणों के लिए आंखें बन्द कीं और अपने अफसर से कहा कि उसकी पत्नी जल्दी ही भली चंगी हो जाएगी। उस महिला का एक छोटा सा आपरेशन हुआ और वह हंसी-खुशी भारत लौट आई। कृतज्ञ पति-पत्नी ने उसे चाय पर बुलाया और महिला ने उस युवक के प्रति अश्रुपूर्ण कृतज्ञता प्रकट की। वह यहां तक कहने लगी कि यही व्यक्ति लन्दन के अस्पताल में मेरे गुर्दे के आपरेशन के समय डाक्टरों से सलाह कर रहा था। पता नहीं यह कृतज्ञ महिला के आत्म-सम्मोहन का मामला

था या उसके आभार प्रकट करने का ढंग था। इस कहानी के प्रचार से सरकार अपने मित्रों की निगाह में बहुत ऊंचा चढ़ गया और यहीं से उसको अध्यात्मिकता का शौक लग गया।

आनन्द मार्ग का जन्म

किस तरह भोले भाले इन्सानों पर उसका जादू चलता गया उसका एक उदाहरण जमालपुर का एक अध्यापक आचार्य दशरथ सिंह था। उसका कहना है : "एक बार मुझसे कोई गलती हो गई और मैं सोच रहा था कि आनन्द मूर्ति जी से कहूं कि वे मुझे इसका यथोचित दण्ड दें। मैं उनके सामने अपना अपराध स्वीकार करने का साहस नहीं जुटा सका। रोजाना की तरह जब मैं एक दिन आनन्द मूर्ति जी के साथ टहल रहा था तो बाबा ने अचानक कहा 'दशरथ, अगर कोई अपनी गलती स्वीकार कर लेता है तो यही उसके लिए सजा है।' मैं पूरी तरह स्तब्ध रह गया हां वे सब कुछ जानते हैं। "हर धार्मिक नेता सैकड़ों बार प्रार्थना प्रवचनों में ऐसा कहता है। आश्चर्य की बात है कि इस बात को तूल दिया एक पढ़े लिखे स्कूल अध्यापक ने, जिसकी प्रभात रंजन सरकार की अकस्मात् कही इस बात को उसकी दिव्यता का प्रमाण मान लिया। 9 जनवरी, 1955 को रेलवे के क्वार्टर नं० 339 में एक संगठन बनाया गया 'आनन्द मार्ग'। सरकार इस नए संगठन का मुखिया खुद बना और पी० के० चटर्जी को इसका मुख्य सचिव बनाया गया।

* * * *

संगठन का उद्देश्य रखा गया 'आध्यात्मिक मुक्ति'। अपने तथाकथित आध्यात्मिक सम्मेलनों के लिए स्कूल और कालिजों के छात्रों को बुला-बुला कर सरकार ने अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाया। संगठन की सदस्य संख्या बढ़ती गई और उसी अनुपात से बढ़ी सरकार की महत्वाकांक्षाएं। छात्रों को आकर्षित किया आनन्दमूर्ति की अद्भुत स्मरण शक्ति ने। आनन्दमूर्ति जब जमालपुर में एक क्लर्क था, उसके तब के एक साथी श्री एम० एन० रायचौधरी ने उसके बारे में एक बार कहा था "मुझे सरकार की आध्यात्मिक शक्ति के बारे में तो कुछ पता नहीं लेकिन हम

उसकी असाधारण स्मरण शक्ति और विभिन्न भाषाएं बोलने की योग्यता से अचरज में पड़ जाते थे।

राजनैतिक रंग

आनन्द मार्ग के सिद्धान्तों और नियमों के अध्ययन से जैसे कि वे सरकार और उसके भक्तों द्वारा विभिन्न इश्तहारों और पत्रिकाओं में प्रतिपादित किए गए हैं, यह मत धार्मिक, नैतिक, अलौकिक और रहस्यपूर्ण विचारों और आचरणों के ऐसे मिश्रण के रूप में सामने आता है जिसमें राजनीतिक स्वर प्रबल है; आनन्दमूर्ति ने 'सद्विप्र समाज' का आदर्श सामने रखा है, जिसे सब समस्याओं का छूयन्तर इलाज बताया गया है और जिसे अलादीन के जादुई चिराग की तरह इस्तेमाल करके प्रगति को वश में किया जा सकता है। सद्विप्र वे हैं, जो आनन्द की प्राप्ति के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते है। "वे नैतिक दृष्टि से दृढ़ होते हैं और हमेशा अनैतिकता से लोहा लेने के लिए तैयार रहते हैं . . ."

सद्विप्रों की कार्यप्रणाली के बारे में आनन्दमूर्ति के विचार बिल्कुल स्पष्ट हैं। वह कहता है "सद्विप्र एक मूक दर्शक नहीं हो सकता, वह सब गतिविधियों में भाग लेता है। . . . इसके लिए उसे शारीरिक शक्ति का भी सहारा लेना पड़ सकता है क्योंकि सद्विप्र को सत्ता के स्रोत पर ही आघात करना होगा, जो शोषक बन रही है। . . . सद्विप्र को शारीरिक शक्ति का प्रयोग करना पड़ सकता है. . अततोगत्वा सद्विप्र समाज में प्रगतिशील समाजवाद के सिद्धान्तों का पालन किया जाएगा (प्रऊत)।"

(आइडियल फार न्यू एरा, बी०एम० सिंह पृष्ठ 11–13)

आनन्द मार्ग के 'आध्यात्मिक आकांक्षी' 'साधक' कहलाते हैं और 'साधना' में ब्रह्म के साथ एकाकार होने का नैतिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इस तरह अन्त में जिस सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया जाएगा प्रउत (प्रगतिशील उपयोगिता तत्व) कहते हैं। प्रउत के जो पांच मूल सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए हैं वे शब्द-जाल और भ्रमित विचारों के सिवाय कुछ नहीं हैं। उदाहरण के रूप में चौथा सिद्धान्त कहता है :–"भौतिक, दार्शनिक, इहलोक, परलोक और आध्यात्मिक उपयोगिता

के बीच उचित समायोजन होना चाहिए।" इस गोरखधंधे का क्या आशय है! क्या इसे आनन्दमूर्ति स्वयं स्पष्ट कर सकता है?

फिर भी, इस बेसिर पैर के विचारों के शब्दों में बहुत से युवक और गरीब दलित उलझ गए।

अवभक्तों का झुण्ड और पहली दरार

1960 में आनन्द मार्ग का प्रभाव महामारी की तरह फैला, सरकार ने कुछ सिर फिरे कट्टर साधकों की एक जमात खड़ी कर ली जो 'अवधूत' कहलाए। जल्दी ही महिला अवधूतिकाएं भी भरती कर ली गईं। 1964 में तो एक शहर "आनन्द नगर" भी बसा दिया गया। सिर्फ उन्हीं लोगों को अवधूत के रूप में दीक्षा दी जाती थी जो आजीवन पूरा समय इस धंधे में लगाने की शपथ लेते थे। अवधूतों के लिए विशेष चोला निश्चित किया गया। इसके अनुसार उनके लिए केसरिया रंग के वस्त्र धारण करना, मूंछ, दाढ़ी और केश बढ़ाना और छुरा रखना जरूरी हो गया।

अवधूत प्रकरण का एक मजेदार किस्सा जानने लायक है। जब प्रभात रंजन सरकार ने आनन्द मार्ग के प्रथम महामन्त्री पी०के० चटर्जी को अवधूत बनने का आदेश दिया तो चटर्जी ने अकड़ कर कहा—"मैं क्यों बनूं ।...पहले आप अवधूत बनिए तभी मैं बनूंगा।" तब जनाबे सरकार ने फरमाया "मैं तो इस संस्था का पिता हूं मेरे दीक्षा लेने की कोई जरूरत नहीं है। मुझ पर इस संगठन के नियम लागू नहीं होते।"

नौकर से भला मालिक की कमजोरियां छिपी रह सकती हैं। असल में चटर्जी, जो सरकार की नस-नस को जानता था उस पर लम्बे चौड़े आध्यात्मिक दावों का जादू नहीं चला। उसने आनन्दमूर्ति को एक फासिस्ट तानाशाह कह कर दुत्कार दिया और 1965 में संगठन को लात मार दी। सरकार की अकड़ से उसके सभी प्रारम्भिक साथी चिढ़ गए और वे एक-एक करके किनारा कर गए। इससे आनन्दमूर्ति को लाभ ही हुआ क्योंकि उसे उन लोगों से मुक्ति मिल गई जो उसके क्लर्क जीवन के साथी थे और उसके

सार राज, सब कमजोरियां, तमाम छलछिद्रों से परिचित थे। अपने एक पुराने साथी से उसने मन की बात उगल भी दी :—"मैं चाहता हूं कि पुराने साथी संगठन को छोड़कर चले जाएं। यह अच्छा होगा कि नए लोग मेरे विगत जीवन के बारे में कुछ न जानें क्योंकि इसी से मेरा रंग जम सकता है।"

("माया" मासिक, मार्च, 1974)

जल्दी ही सरकार स्वयंभू अलौकिक जीव बन बैठा। उसके भक्तों ने उसे "तारकब्रह्म" की पदवी दे दी। ऐसा ब्रह्म जो "जब जब भीर परी भगतन पं" तभी पृथ्वी के परित्राण के लिये अवतरित होता है। भगवान कृष्ण ने गीता में "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति" श्लोक मानो इसी महाशय के अवतरण के लिए लिखा था। आंखों के अंधे नाम नयनसुख, इसके भक्तों ने भी इसे कृष्ण का अवतार घोषित करने में जरा भी शर्म हया महसूस नहीं की। हिन्दू धर्म के जाने माने नेताओं और महात्माओं ने इस लम्बे चौड़े दावों को अस्वीकार किया और आनन्दमूर्ति की कठोर आलोचना की।

महात्माओं द्वारा प्रताड़ना

पुरी के जगतगुरु शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ ने आनन्दमार्ग की निन्दा करते हुये कहा :—"मैं सब लोगों को चेतावनी देना चाहता हूं कि वे आनन्दमार्ग और ब्रह्मकुमारियों जैसे संगठनों से सचेत रहें। वे धर्म राष्ट्र और मानवता के पक्के दुश्मन हैं। ये सगठन योग, ज्ञान, भक्ति और परमपद प्राप्ति की शिक्षा देने का झूठा दावा करके जनता को सत्य का मार्ग छोड़ने के लिए कहते हैं।

(आर्यावर्त दैनिक पटना, 2 नवम्बर, 1965)

इतना ही नहीं कि सनातनियों ने ही इनको धिक्कारा हो, हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदायों जैसे आर्य समाज ने भी इन्हें लगते हाथों लिया। बिहार में आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष आचार्य रामानन्द शास्त्री ने कहा, "आनन्द मार्ग का दार्शनिक आधार कोई प्रामाणिक धर्मग्रन्थ नहीं है बल्कि प्रभात रंजन

सरकार के निरंकुश आदेश हैं ।'''''''आनन्द मार्गी सरकार को भगवान का अवतार कह कर भारतीय संस्कृति और परम्पराओं की धज्जियां उड़ा रहे हैं ।"

("आनन्द मार्ग क्या है" पृष्ठ 13–14)

चौंका देने वाले राजनैतिक विचार

आनन्द मार्ग के राजनैतिक विचार तो और भी ज्यादा चौंका देने वाले हैं। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने लोकतंत्र का मार्ग चुना, जो उनकी राजनैतिक आस्था का प्रतीक है। आनन्द मार्ग की नजरों में लोकतंत्र अभिशाप है। आनन्दमूर्ति कहता है :—

—"लोकतंत्र में सिर्फ मतों के बल पर व्यक्ति को योग्य मान लिया जाता है। उसकी योग्यता की परख दूसरे उचित तरीकों से नहीं की जाती ।"

—लोकतंत्र में 'वयस्क मतदान कर सकते हैं, यह सुनने में बड़ा मधुर लगता है, लेकिन इस स्थिति में राजनीति से बेखबर मतदाता सरकार को कमजोर बना देते हैं। इसलिये बिना पढ़े लिखे या कुपढ़ लोगों को मतदान का अधिकार नहीं दिया जाना चाहिये ।"

—भारत जैसे देश में जहां बे-पढ़े-लिखे लोगों का बाहुल्य है लोकतंत्र एक स्वांग है। सभी ऐसे देशों में चालाक और सम्पन्न लोग आसानी से निरक्षरों से मत प्राप्त कर लेते या उन्हें खरीद सकते हैं · · · · भारत जैसे देश में सत्ताधारी जनता को जानबूझकर जाहिल और अनपढ़ बनाए रखते हैं क्योंकि इससे वे सत्ता में बने रहते हैं ।"

(आइडियल फार न्यू इरा)

इन सब बातों से सवाल उठता है— किस तरह की सरकार अच्छी हो सकती है ? आनन्दमूर्ति का ख्याल है :—"लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब उसके अधीन प्रगतिशील समाजवाद (प्रउत) फले-फूले। अन्यथा

जनता की, जनता के लिए और जनता द्वारा चुनी गई सरकार मूर्खों की, मूर्खों के लिए और मूर्खों द्वारा चुनी सरकार हो जाएगी ।

प्रगतिशील विचार "समाजवाद" के बारे में सरकार कहता है :—"लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाजवादी सरकार के लिए कोई जगह नहीं है । जो लोकतांत्रिक व्यवस्था से समाजवाद लाना चाहते हैं वे जनता को उल्लू बनाते हैं । यह संवैधानिक त्रुटियों या भूलों से किनारा करने का एक रास्ता है, जिससे जनता को अपने पीछे लगाया जा सके । जो लोग समाजवाद की दुहाई देते हैं और समाजवादी समाज की स्थापना के सब्ज बाग दिखाते हैं वे बिल्कुल मूर्ख हैं । तथाकथित नेता सिर्फ हाथी के दिखावटी दांत हैं ।"

"जबानी जमा खर्च से मानव समाज का कल्याण नहीं हो सकता । यह जादू किसी खास समय तक किसी खास देश में और किसी खास व्यक्ति के लिये ही कारगर उपाय हो सकता है ।"

(वही पृष्ठ 31–32)

समाजवाद का घोरतम शत्रु भी पूंजीवाद का सीधे से प्रचार करने का दुस्साहस नहीं कर सकता । आनन्दमूर्ति भी इस बात को जानता है और उसने भी प्रकटतः पूंजीवाद को गालियां दी हैं । वह कहता है :—"भारत में पूंजीवादियों ने राष्ट्रीय सम्पत्ति को हजम कर लिया है, हालांकि देश को राष्ट्रीय आय बढ़ गई है लेकिन प्रति व्यक्ति आय नीचे को खिसक रही है । भारतीय पूंजीवादियों ने राजनीति पर छा कर यह किया है और इससे देश में एकाधिकारवादी पूंजीवाद की जड़ें काफी गहरी हो गई हैं ।" (एक आनन्दमार्गी प्रकाशन: 'नोट्स आन सोशल फिलोसोफी' पृष्ठ 46) ।

स्वयंभू मसीहा :

इस मदांध नीम हकीम ने अपना खुद का ही दर्शन बखान मारा :—"पूजीवाद मनुष्य को दासता की बेड़ियों में जकड़ देता है और समाजवाद उसे पशुवत बना देता है ।" वह कहता है, "जब पुरानी व्यवस्थाएं चरमरा कर टूट जाती हैं तो भ्रष्ट तथा अनैतिक तत्वों को सत्ता प्राप्त करने का मौका मिलता है, सब ओर वे छलकपट और मक्कारी से उसे कायम रखने की कोशिश करते हैं ।

तब समाज में सैद्धांतिक शून्यता उत्पन्न हो जाती है। उस समय मानव जाति को जीवित रखने के लिए नई आशाएं, नया विश्वास और नए शक्तिशाली गतिशील सिद्धान्त लेकर एक युग पुरुष पैदा होता है। वह मानव विकास का नियंत्रण करता है और जो बाधाएं उसके समक्ष आती हैं उन्हें वह दूर कर देता है। वह व्यक्ति का और कुल मिला कर पूरे समाज का दिशा निर्देशन करता है।" आनन्द मार्गियों के विचार से भारत में ऐसे युग पुरुष का जन्म हो गया है और वह युग पुरुष है 'आनन्दमूर्ति'।

1970 में 26 से 29 जनवरी तक वाराणसी में आनन्द मार्गियों की एक गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी में कहा गया—"पहला तारकब्रह्म शिव था दूसरा कृष्ण और तीसरा है आनन्दमूर्ति। भगवान के तीसरे अवतार के रूप में आनन्दमूर्ति एक निश्चित उद्देश्य लेकर उतरे हैं। उनका उदश्य है कि हरेक को साधना द्वारा आत्मशुद्धि करनी चाहिये और हर व्यक्ति को साधक बन जाना चाहिये। वह उस समय धरा पर अवतरित हुये तब तन्त्र-साधना न केवल पतनोन्मुख थो बल्कि हर व्यक्ति तन्त्रसाधना से भयभीत था क्योंकि संक्रांतिकाल में तन्त्र-साधना विकृत हो चुकी थी। अब वे तन्त्र-साधना को नया आयाम और स्पष्ट स्वरूप दे रहे हैं जिससे यह सर्वप्रिय हो सके। इसके दो रूप हैं :—(1) आंतरिक और (2) बाह्य। आंतरिक तन्त्र-साधना घर पर ही की जा सकती है और बाह्य साधना वह है जो श्मशानघाट पर की जाए। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। तारकब्रह्म को साधना की आवश्यकता नहीं बल्कि वह शिष्यों को नियंत्रित करता है, वह उस समय भी साधना करता है जब वह जनता के बीच होता है।

परमात्मा या तारकब्रह्म सर्वशक्तिमान है। उसके मन में किसी के प्रति घृणा नहीं। बाबा की दृष्टि में सब समान हैं—जाति, नस्ल या दौलत के कारण वह किसी से भेदभाव नहीं करता।"

इस तरह की व्यक्ति-पूजा का प्रचार करने वाला आनन्द मार्ग, अगर अधिनायकवाद की स्तुति करे तो इसमें किसी को भी आश्चर्य नहीं हो सकता।

आनन्द मार्ग के मुखिया का कहना है—कोई भी बुद्धिजीवी उस सिद्धांत का समर्थन नहीं कर सकता जिसका कोई व्यावहारिक मूल्य न हो। समाज का कल्याण द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद या लोकतंत्र के माध्यम से नहीं हो सकता। इस तरह, नैतिक और आध्यात्मिक सद्विप्रों का हितषी-अधिनायकवाद का उदय ही इसका समाधान है।"

कुछ हद तक हितैषी-अधिनायकवाद का सिद्धान्त नाजी विचारधारा से मिलता जुलता है। आनन्दमूर्ति का कहना है "इतिहास गवाह है कि राजनैतिक नेतृत्व सदा विफल रहा है क्योंकि नेताओं का कोई नैतिक आधार नहीं था। उन्होंने एक पक्षीय ढंग से सोचा—किसी का रुझान आर्थिक रहा किसी का राजनीतिक और कुछ धार्मिक रूझान वाले नेता हुए। लेकिन उनमें आध्यात्मिका का नामो निशान भी नहीं था।" भक्तों को बताया गया कि आनन्दमूर्ति में इस प्रकार की कोई कमजोरी नहीं है और उनका अवतरण एक मसीहा का जन्म है।

श्रीमती सरकार ने पोल खोली

अपने आपको 20वीं सदी का भगवान कहने वाला यह इंसान किस कोटि का है? उसकी पोल खोली है उसकी पत्नी श्रीमती उमा सरकार ने। 1971 में जारी किए गए एक बयान में उसने अपने 'पूज्य पति' पर भयानक आरोप लगाए हैं। उसने कहा :

"श्री प्रभात रंजन सरकार उर्फ आनन्दमूर्ति आनन्द मार्ग का आध्यात्मिक गुरु मेरा पति है। वह सिर्फ अध्यात्मिक गुरु ही नहीं है बल्कि अपने आपको खुदा समझता है। यह साबित करने के लिए उसने जमीन आसमान के कुलाबे मिला दिए। उसके स्वार्थों की कोई सीमा नहीं है। वह सिर्फ धार्मिक नेता बने रहने से ही सन्तुष्ट नहीं। उसके सपने बहुत ऊंचे है। जितना ही वह शक्तिशाली बनता जाता है उतनी ही उसकी लिप्सायें बढ़ती जाती हैं। यही कारण है कि वह उचितानुचित को भुला बैठा है। अपने आध्यात्मिक शिष्यों को वह आध्यात्मिक पाठ बिल्कुल नहीं पढाता। जो लड़के इस उद्देश्य से उसके पास आते है वह उनके साथ दूसरे ही कुकर्म करता है।

उनके नैतिक उत्थान की उसे लेशमात्र चिंता नहीं और वह उनके भविष्य से खिलवाड़ करता है। उसने उनसे काम करने के लिए कहा और उन पर ख्याली योजनाओं पर चलने के लिए जोर डालना शुरू कर दिया। जब वे उसके इरादों को पूरा न कर सके तो उन्हें दारुण यातनायें दी गई और इतना तक नहीं सोचा गया कि अमुक कार्य करने की उनकी सामर्थ्य थी भी या नहीं। इसलिए यातनाओं से बचने के लिए वे लड़के झूठ-कपट का आश्रय लेते थे। एक बार अगर किसी ने पाप कर दिया तो उसको यह प्रवृत्ति बढ़ती ही गई। मुंह पर तो वे अपने गुरु को भगवान कहते और पीठ पीछे उस पर फब्तियां कसते। मैं चुपचाप सब कुछ सहती रही, क्योंकि मैं जानती थी कि अगर मैंने विरोध प्रकट किया भी, तो इसका कोई परिणाम नहीं निकलेगा। लेकिन अन्त में मेरे धैर्य का बांध टूट गया जब मैंने देखा कि उन्हें आध्यात्मिक शिष्य बनाने की जगह गद्दार घोषित कर दिया गया और जरा-जरा सी बातों पर उनकी हत्या की जाने लगी। मुझे उस समय अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ जब मैंने इस आध्यात्मिक गुरु को हत्या की शिक्षा देते हुए सुना। फिर भी व उसके 'बेटे' बने रहे। मैंने विरोध किया पर बेकार रहा। उसने अपने आपको 'निर्दोष' बताया।

बात सिर्फ यहीं खत्म नहीं होती। मैं पिछले चार वर्षों से देख रही हूं कि किस तरह उसने छोटी उमर के मेरे सन्यासी पुत्रों के बारे में मनगढ़न्त कहानियां बना कर यह साबित करने की कोशिश की कि वे पूर्वजन्म की युवतियां हैं और इसके बाद उनसे कुत्सित समलिंगी सम्बन्ध जोड़े। मैंने विरोध प्रकट किया और कहा कि पुत्रों के साथ दुराचार एक घोर पाप है। लेकिन उसने अपने को सही ठहराया और इसी पटरी पर चलता रहा। क्या धर्म के नाम पर किसी ने दिन-दहाड़े ऐसा अधर्म किया है? क्या कहीं ऐसा हुआ है? उसने सत्य पर पर्दा डालने के लिए एक प्रपंच का आश्रय लिया और जब मैंने विरोध प्रकट किया उसने ऐसी परिस्थितियां पैदा कीं कि कुछ कहना मुश्किल हो गया। इस पाप को भोगने वाले पुत्रों से जब सहा नहीं गया तो उन्होंने संगठन को छोड़ दिया उन्हें पकड़ लिया गया और मौत के घाट उतार दिया गया। उन पुत्रों की सूची बनाई गई, जिन्हें अभी कत्ल किया जाना बाकी था। वह एक ओर तो भगवान

शिव और तारक ब्रह्म होने का दम भरता है दूसरी ओर वह अपनी कामुक इच्छाओं का दमन न कर पाने के कारण चक्रवर्ती सम्राट बनने के जोरदार प्रयत्न कर रहा है। वह ऐसे मंसूबे बांध रहा है कि उसके सामने सारे तंत्र, संसार की सम्पूर्ण कलाएं और साहित्य, समस्त संत महात्मा और महामानवों की कीर्ति फीकी पड़ जाय। वह हर जगह अपना पंजा जमाना चाहता है। उसकी बराबरी कोई न कर सके। क्या इतिहास में किसी व्यक्ति ने धर्म के नाम पर ऐसी योजना बनाने का पाप किया है । कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता प्रभु मिलन के नाम पर कितने खून किए जा रहे है।"

नाटकों में भी ऐसा अभिनेता देखने को नही मिलता। धूर्तों मे भी उसकी जोड़ का कोई व्यक्ति नही मिलता और न निर्दयता में कोई उसका मुकाबला कर सकता है। यह तो सच है कि जब कोई व्यक्ति पाप करता है तो वह उसे पाप नहीं मानता। लेकिन भगवान की भूमिका में, धर्म के नाम पर सर्वशक्तिमान के रूप में पाप करने वाला यह पहला व्यक्ति है। मेरे पुत्र उसके सम्मोहन के वशीभूत होकर असत्य को सत्य, रात को दिन कहने को तैयार हो जाते हैं। अन्त मे मै ज्यादा सहन नही कर सकी और इस पाप का भंडा फोड़ कर दिया।

मैंने उससे सब पाप स्वीकार कर लेने के लिए कहा लेकिन उसने चुप्पी साध ली। तब एक रात मैंने उससे स्पष्ट कह दिया कि मैं इस नरक में नही रह सकती। मैं उससे पिंड छुड़ा कर अपने एकमात्र बच्चे को लेकर चली आई। तभी से हम निराश्रित और बिल्कुल असुरक्षित है। मुझे पता है कि जल्दी ही मैं शत्रु घोषित कर दी जाऊंगी और मेरे विरुद्ध हर प्रकार की गन्दगी उछाली जाएगी। इसी कारण उस रात उसने मेरे बारे मे कोई चिंता नहीं की। उसने ऐलान कर दिया कि हम शत्रु है। हम से मेरा मतलब है, मै और मेरा समर्थन करने वाले, वे है—विशोखानन्द अवधूत, उसका वैयक्तिक सहायक सिद्धानन्द अवधूत, शिक्षा सहायता और कल्याण विभाग का सचिव, जो आनन्द मार्ग का सब से बड़ा विभाग है, सिरंदा अवधूत, प्रकाशन सचिव और अवधूतिका मैत्रेयी, महिला कल्याण अनुभाग की सचिव और उसका 12 वर्ष का एकलौता पुत्र।"

"उसकी पत्नी होने के नाते मैंने उससे पापों से दूर रहने का आग्रह किया। मेरे हृदय में यह बात बिंध गई और मुझे इस बात से ग्लानि हुई कि धर्म के नाम पर उनके साथ दुराचार न किया जाए जो हमारे पुत्र बन कर आते हैं। यही मेरा सब से बड़ा द्रोह ठहराया गया और मुझे शत्रु वर्ग में सम्मिलित कर दिया गया। क्या किसी ने सुना है कि जिसे ईश्वर समझ कर पुत्र, जिसका ध्यान धरें. वही एक बेरहम कसाई बन कर उनका सिर कलम कर दे? अगर सन्यासी के वेश में कोई ओछी राजनीतिक चाल चले तो कौन सन्यासी पर विश्वास कर सकता है? मैंने खुद देखा है कि किस तरह पापों का घड़ा भर गया।

"मैं सभी समझदार लोगों से मार्मिक अपील करती हूं, मैं उन सभी पिताओं से अपील करती हूं जिनके निरीह पुत्रों का बलिदान कर दिया गया है, मैं सरकार से आग्रह करती हूं कि वह खुद इस बात को देखे और फैसला करे। अगर ऐसे जघन्य अपराधों को सहा जाता रहा तो दुनिया से सत्य और धर्म का नामोनिशान मिट जाएगा ....।"

आनन्द मार्ग के प्रणेता की पत्नी ने 24 फरवरी, 1972 को नई दिल्ली में एक संवाददाता सम्मेलन में फिर कहा कि उसका पति धर्म की आड़ में पाखंड और जघन्य अपराध कर रहा है। श्रीमती उमा सरकार ने संवाददाताओं को बताया कि "ऐसे संगठन को खुला छोड़े रखा गया तो यह एक दिन समाज के लिए खतरा बन जाएगा। समझाने से उसके कान पर जू नहीं रेंगती और युवा स्वयं सेवकों को भलमनसाहत का अनुचित लाभ उठा कर वह राजनीतिक सत्ता प्राप्ति या दूसरी तरह के स्वार्थ साधन करना चाहता है। मैंने बहुत ही क्षोभ और वेदना के साथ आनन्द मार्ग का परित्याग किया है, क्योंकि मैं बहुत ज्यादा समय तक इस तरह की अंधेरगर्दी सहन नही कर सकती। धर्म की आड़ में जो धांधलियां की गई उनके अलावा अमानवीय कुकृत्यों और बेरहमी को मैं चुपचाप तमाशा समझ कर नहीं देखती रह सकती।" उसने आरोप लगाया कि "आनन्दमूर्ति ने अच्छाइयों से नाता तोड़ लिया है और अपने ही बिछाये जाल में फंस कर वह ऐसे काम करने लगा है, जिन्हें समाज का हीनतम आदमी भी नहीं करता "

समलिंगी मैथुन के आरोप :

इस रंगे सियार 'सन्त' की काली करतूतों का भंडाफोड़ सिर्फ उसकी पत्नी ने ही नहीं किया। आनन्द मार्ग के चार सह-संस्थापकों और लेखक ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा "जब सरकार की समलिंगी मैथुन जैसी करतूतों का पर्दाफाश हो गया तो उसने यह कह कर भुझ पर लीपने की कोशिश की कि यह तांत्रिक क्रिया है जो अनुशासनवर्द्धक है। सन्देह करने वाले शिष्यों को समझाया गया कि यह संभोग शिष्य की पूर्व जन्म की कामनाओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है, जिसने राधा के रूप में "परमपुरुष" को समर्पण की इच्छा की थी, जो तब पूरी न हो सकी। अब उसके मोक्ष के लिए यह इच्छा पूर्ति जरूरी है। इस तरह की हालत में नैतिकता की सही मान्यताएं क्या रह सकती थीं जब कि श्री सरकार या उनके किसी शिष्य का हर कुकर्म जायज माना जा रहा था।"

'सेकूलर डेमोक्रेसी' के जनवरी, 1972 के अंक में कुछ भूतपूर्व आनन्द मार्गी कार्यकर्ताओं ने, जिन्होंने क्षुब्ध हो कर संगठन छोड़ दिया था, संगठन की कलई खोल दी और कड़े शब्दों में उसकी निन्दा की। आनन्द मार्ग के अर्ध सैनिक संगठन, स्वयंसेवक समाज सेवा के आन्ध्र और मैसूर के सर्किल कमांडर चिदात्मानन्द अवधूत ने लिखा : "उसका नारा था दुखों को आत्मसात करो, दुखों से तुम्हें तद्विप्र राज्य स्थापना में सहायता मिलेगी।" लेकिन वह खुद जीवन के सारे वैभव और ऐश्वर्य भोग रहा है। आनन्द मार्ग का मूलमन्त्र रखा गया था आत्मा की मुक्ति और सबकी सेवा, लेकिन वास्तव में हो इसके बिल्कुल विपरीत रहा है। यह 'सबका उन्मूलन कर एक के प्रभुत्व' के लिये काम कर रहा है। आनन्दमूर्ति जिसे कभी हम पूज्य समझते थे और अपनी विकट कूटनीति से जिसने अनेकों के दिलों पर कब्जा कर लिया था अब वह एक पथभ्रष्ट अपराधी बन गया है।

"जब मैंने क्षुब्ध होकर संगठन की दूषित प्रणाली का विरोध करना शुरू किया तो मुझे विश्वासघाती और षड्यंत्रकारी घोषित कर दिया गया, क्योंकि मैंने उसके कारनामों की कलई खोल दी थी। हत्यायें, बलात्कार और सम-

लिंगी सम्भोग का नंगा नाच हो रहा था 'अंधा गुरु, लालची चेला, दोनों नरक में ठेलमठेला' की तरह गुरु शिष्य सभी दुराचारी बन बैठे । भ्रष्ट कर्मचारियों को भारी उत्तरदायित्व सौंप दिया गया । आनन्दमूर्ति के साथ लगे उच्च अधिकारी पागल हो गये थे । दिल्ली के पी० एफ० आई० दफ्तर में एक अवधूत को समलिंगी सम्भोग करते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया । उसे आनन्दमूर्ति ने मांफ कर दिया । इतने सोचा आनन्दमूर्ति कितने दयालु हैं । लेकिन नहीं ? आनन्दमूर्ति खुद समलिंगी सम्भोग का अपराधी है । उसे स्वयं उसकी पत्नी उमा सरकार ने काला मुंह करते पकड़ा था ।"

दुखद हत्याएं

प्राउटिस्ट फोरम आफ इंडिया की केन्द्रीय समिति के सदस्य आचार्य कृष्णानन्द अवधूत ने कहा—"आनन्दमूर्ति अपने आपको तारक ब्रह्म कहता है, जिसका मतलब है ईश्वर से भी उच्च और महान । मेरा उसमें अन्ध विश्वास था लेकिन कभी-कभी जब मैं उसके कार्यों और कार्यक्रमों का विश्लेषण करता तो मुझे गड़बड़ मालूम होती । लेकिन इसे मैं अपनी निर्बलता और क्षुद्रता समझ कर अपने मन को समझा लेता ।"

"1970 के अन्त में आनन्दमूर्ति ने बागी अनुयायियों को शत्रु घोषित करना शुरू कर दिया । उन्हें पंचमार्गी बताया और ऐसा पता चला कि उन्हें चुपचाप ठिकाने लगा दिया गया है । मैं इन सब कुकृत्यों से अनभिज्ञ था । पर कुछ महीने बाद इन निर्मम हत्याओं की मेरे कानों में भनक पड़ गई और मैं बुरी तरह कांप उठा, मेरे हृदय पटल में आनन्दमूर्ति की लुभावनी मूर्ति एकदम विकृत हो गई । लेकिन मैंने अपनी भावनाओं को दबाये रखा । और किसी प्रकार का प्रतिरोध नहीं किया, कहीं मुझे भी मौत की गोद में न सुला दिया जाये ।"

भ्रम निवारण

अगर किसी संगठन पर उसकी क्षमता से ज्यादा भार डाल दिया जाए तो वह चरमरा कर खुद ही बिखर जाता है । आनन्दमूर्ति की सत्ता लोलुपता और

धन की मांग इतनी बढ़ गई कि उसके अनुयायी बिदक उठे। जो बेचारे राम भजन को आये थे वे कपास औटने लगे। कहां आध्यात्मिक साधना और नैतिक समाज की स्थापना का संकल्प और कहां ऊंचे पदों पर आसीन आनन्द मार्गी सरकारी अधिकारियों की सहायता से तस्करों, काला धन्धा करने वालों और पेशेवर कर-वंचकों के पीछे-पीछे धन ऐंठने के लिये फिरना। इस धनराशि से आनन्दमूर्ति की योजनाओं को पूरा किया जाता था।

अपनी अपरिमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आनन्दमूर्ति बहुत कट्टर था। जो अवधूत तनिक सी भी चूक कर बैठता उसे उसको अत्यन्त कड़वे फल चखने पड़ते। एक आंख में आतंक और दूसरी में गुरु कृपा; अपना प्रभुत्व कायम रखने का उसका अपना ही तरीका था। उसने उनको कठोर यातनाओं, और कष्ट तथा पग-पग पर उत्पीड़न का प्रसाद दिया। एक भूतपूर्व अवधूत ने बड़ी ही रोमांचकारी घटनाएं बताई कि किस तरह उन पर कोड़े पटकाए जाते थे, यहां तक कि बेचारों का कपड़ों में ही टट्टी पेशाब निकल आता था। काल कोठरी में बन्द करने और कई दिन तक पीट-पीट कर खाल उधेड़ देने का भी उसने वर्णन किया। बिना देखे इन बातों पर यकीन नहीं हो सकता कि 'साक्षात भगवान' के नेतृत्व में चल रहे संगठन में ऐसी घिनौनी घटनायें घट रही थीं।

ऐसी मनमानी अंधेरगर्दी अधिक समय तक नहीं चला करती। आखिरकार एक सीमा है, जिसके आगे मानव बर्दाश्त नहीं कर सकता, अगर स्वयं भगवान भी सामने हों तो भी एक समय ऐसा आता है जब सूखे ठूंठ का चरमरा कर गिरना पड़ता ही है। कुछ अवधूतों ने संगठन से सलाम कर लिया और कुछ असन्तुष्ट होकर कानाफूसी करने लगे।

उनके बिदकने का कारण अमानवीय शारीरिक यातनाएँ ही नहीं थीं बल्कि कुछ अन्य कारण भी थे कि अवधूतों के मन में शंका और संशय का तूफ़ान उठने लगा। शुरू में आनन्दमूर्ति ने बहुत ही विश्वास के साथ कहा था कि उसकी योजनाएँ जल्दी ही फलीभूत होने वाली हैं। वर्ष पर वर्ष बीतते गए तो आनन्द-

मूर्ति के दावों का थोथापन प्रकट होता गया। आनन्दमूर्ति एक के बाद दूसरे बेसुरे राग छेड़ता गया और कार्यकर्ताओं को ऊल-जलूल कामों में उलझाये रहा। पूरे एक साल तो वह अवधूतों को पुरानी प्रउत व्यवस्थाओं का पाठ पढ़ाने में घुमा गया और उसने अगला साल कथा-कीर्तन वर्ष घोषित कर दिया, जिसमें अवधूतों से कहा गया कि वे बाबा नाम केवलम् का जाप करते रहें और इसकी धुनों पर नाचते गाते रहें।

प्रपंच का सिंहासन डोल गया। श्रद्धेय आनन्दमूर्ति अब नेत्रशूल बन गया। अब तो वह था एक चालाक अधिनायक, जो स्वयं तो विदेशी कारों में उड़ा-उड़ा फ़िरता, वातानुकूलित बंगलों मे ऐश करता और अपने शिष्यों के साथ अप्राकृतिक भोग-विलास में लिप्त रहता और दूसरों को पाठ पढ़ाता 'कष्ट तुम्हारे भूषण हैं। इसमें आश्चर्य ही क्या है कि अवधूतों ने एक-एक करके खूंटा तुड़ाना शुरू कर दिया।

अपरिमित यातनाएं

अब ऐसा समय आ गया कि आनन्दमूर्ति ने अत्याचारों की तमाम सीमायें तोड़ दीं और निकृष्टतम श्रेणी का पाखंडी बन गया। उसने धूर्तता, मायावी, अन्तर्यामी गुरु, सर्वोत्कृष्ट विद्वान, कुशल मनोवैज्ञानिक, चपल-अभिनेता और अन्ततोगत्वा सर्वशक्तिमान भगवान बनने जैसे सभी हथकंडे अपनाने शुरू किए जिससे कि चेलों को खूंटे से बांधे रखा जा सके। जब ये सफल नहीं हुए उसने अपना रौद्र रूप दिखाया।

"1970 की जुलाई में उसने बागी अवधूतों के पहले दल को ठिकाने लगाने का आदेश दिया। भयाक्रान्त अवधूत इधर उधर जान बचाते फ़िरते और 36 संन्यासियों की हत्या की विचित्र कहानियां सुनाते रहते।

आनन्दमूर्ति द्वारा नियुक्त जल्लादों का दस्ता अपने साथियों को बहकाकर छोटा नागपुर के जंगलों में ले जाता और वहां उनके गुर्दे फ़ाड़ दिए जाते, जननेन्द्रिय चीर दी जातीं, आखें निकाल ली जाती और चेहरा बिगाड़ दिया जाता।

जून 1971 में रांची में स्थानीय जनता और आनन्दमार्गियों के बीच एक संघर्ष हो गया जिसके बाद आनन्दमूर्ति कार में बैठ कर पटना भाग गया। इस भगदौड़ में, जर्मनी में बसे एक अमरीकी नागरिक एन्ड्रूस ने, जो आनन्द मूर्ति के साथ ठहरा हुआ था, प्रमुख भाग लिया। आनन्दमार्गियों के मोह-भंग का एक कारण यह भी था। आनन्दमूर्ति की अलौकिकता को पहला झटका 1969 में कूच बिहार में लगा था। जब मार्गियों का जनता से टकराव हुआ और दूसरों के साथ सरकार को भी गिरफ्तार किया गया और जनता ने उसकी अच्छी तरह ठुकाई की थी।

इन घटनाओं का परिणाम यह निकला कि बड़े-बड़े आनन्द मार्गियों ने अपने स्वामी की तरफ़ से नजर फेर ली। विद्रोह करने वालों में पहला दल था बंगाली अवधूतों का, जिसमें थे जगेश्वरानन्द, मृत्युंजयानन्द और भवानन्द। आरोप पत्र के अनुसार, जो पटना मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया, आनन्दमूर्ति ने संगठन में पैदा मतभेद के लिए जिम्मेदार भगोड़ों को कुचल देने का इरादा बना लिया था। इस बीच जगेश्वरानन्द और मृत्युंजयानन्द ने पश्चिम बंगाल में काक द्वीप में एक स्कूल शुरू कर दिया। दो अन्य सुष्मितानन्द और शुभानन्द जिन्हें पश्चिम बंगाल में आनन्द मार्गी स्कूलों में प्रिंसीपल नियुक्त किया गया था, आनन्द मार्ग छोड़ कर काक द्वीप स्कूल में चले गए। आरोप पत्र के अनुसार सर्किल कमांडर जपेश्वरानन्द की वफ़ादारी पर भी सन्देह था।

आनन्दमूर्ति और कुछ अन्य अवधूतों को शक था कि सभी भगौड़ों की आपस में मिली भगत है। आरोप पत्र के अनुसार "इसीलिए जगेश्वरानन्द, मृत्युंजयानन्द, शुभानन्द और सुषमितानन्द को कत्ल करने की साजिश रची गई।" इन अवधूतों का सफ़ाया कर दिया गया।

पहली अक्तूबर, 1971 के तुरन्त बाद जब आनन्द मूर्ति को कलकत्ता में "महा धर्मचक्र" नामक पवित्रतम समारोह में भाषण करना था, उसी समय उमा सरकार और विशोकानन्द के नेतृत्व में उच्चस्तरीय अवधूतों के एक वर्ग ने कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक खुले आम बुलाई और आनन्दमूर्ति की पोल खोल दी और कहा कि यह कार्यकर्ताओं को नरक कुण्ड में ले जा रहा है, और भगवान

बनने का नाटक रच रहा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे अपने लम्पट गुरु की अवहेलना करके अपने कंधों से मानसिक दासता का जुआ उतार फेंके।

इसके बाद श्रीमती उमा सरकार अपने 12 वर्षीय पुत्र गौतम और विशोखानन्द के साथ किसी अज्ञात स्थान के लिए रवाना हो गई। आज तक उनका अता पता नहीं है। अपने छिपने की जगह से उन्होंने दो अलग-अलग वक्तव्य दिए, जिनमें इन आरोपों के अलावा उन 17 अवधूतों के नाम पते भी दिए गए हैं, जिन्हें आनन्दमूर्ति की हिदायतों के अनुसार जान से मार डाला गया है। उन्होने आशंका व्यक्त की है कि विद्रोह के लिए हमें भी प्राणों से हाथ धोना पड़ सकता है।

इसके बाद से आनन्द मार्ग का अनुशासित संगठन बिखरना शुरू हो गया। अवधूतों ने हजारों घटनायें बताईं, जिनमें एक स्वर में इस योग तांत्रिक संगठन की नारकीय गतिविधियों का हवाला दिया गया है।

24 दिसम्बर, 1971 को केन्द्रीय जांच ब्यूरो के ऊंचे अधिकारियों ने पटना में आनन्द मार्गियों के घरों पर धावा बोल दिया और वहां से सन्देहास्पद दस्तावेज, कीमती साड़ियां, टेप रिकार्डर और कम्प्यूटर बरामद किए, साथ ही 90 हजार रुपए की नकदी भी कब्जे में ली। पटना की आलीशान बस्ती, पाटलीपुत्र में आनन्द-मार्ग के दफ्तर के साथ ही साथ अधिकारियों ने मार्ग के अध्यक्ष और मार्ग के भूतपूर्व संसद सदस्य के घर भी छापा मारा।

आनंदमूर्ति की गिरफ्तारी

केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने षड्यन्त्र और हत्याओं के आरोप में 29 दिसम्बर 1971 को प्रभात रंजन सरकार उर्फ़ आनन्दमूर्ति को गिरफ्तार कर लिया। तब से आज तक वह पटना की बांकीपुर केन्द्रीय जेल में हैं। इस सिलसिले में पटना और वाराणसी में 4 और आनन्दमार्गी पकड़े गए।

आनन्दमार्गियों ने अप्रैल, मई 1973 में पटना और नई दिल्ली में कुछ सनसनी फ़ैलाने की कोशिश की। उन्होंने प्रचार किया कि एक अवधूत दिव्यानन्द ने 9 अप्रैल को भोर की बेला में पटना में बिहार विधान सभा भवन के सामने आत्मदाह किया।

पुलिस सूत्रों ने कहा कि ऐसा लगता है कि किसी की लाश को जला दिया गया। मार्ग के एक अनुयायी ने बताया कि उसने न तो आग की लपटों में कुछ जलता देखा और ना ही जलने वाले की कराहट या सिसकारियां सुनीं।

24 अप्रैल को एक अवधूत, दिनेश्वरानन्द के तथाकथित आत्मदाह की एक और घटना सुनने को मिली, यह वारदात दिल्ली में पुराने किले पर हुई। लेकिन पुलिस और पत्रकारों को इस 'आत्मदाह' के स्थान और समय के बारे में आश्चर्य हुआ क्योंकि पूर्व घोषणा के अनुसार यह आत्महत्या 24 तारीख के बाद राष्ट्रपति भवन या प्रधान मंत्री निवास के बाहर घटनी थी।

इस वारदात के बारे में कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सिस्टम का एक फ़ोटोग्राफ़र सुरेन्द्र मोहन लाल और उसी संस्था की एक साउण्ड रिकार्डिस्ट पेट्रिका को गिरफ्तार किया गया। यह महिला फ्रांस की नागरिक थी। इन्हें बम्बई में पकड़ा गया। बाद में दोनो दिल्ली आए। पुलिस का कहना था कि अवधूत की 'हत्या' के षड्यन्त्र में इन दोनों का हाथ है। इस्तगासे ने इन दोनों को हिरासत में रखने के लिए कहा क्योंकि वे एक गम्भीर षड्यन्त्र में शामिल थे और जांच पड़ताल में इनकी जरूरत थी, जो चल रही थी। पुलिस का ख्याल था, जिस समय 'आत्मदाह' का स्वांग रचा गया इन दोनों ने उसके फ़ोटो खींचे थे।

मजे की बात यह थी कि पेट्रिका और लाल दोनों उस समय पटना में भी थे जब कथित "आत्मदाह" किया गया। बाद में एक रहस्यपूर्ण कार दुर्घटना में पेट्रिका मारी गई। कार लाल चला रहा था। इसके बाद लाल विदेश भाग गया और बताया जाता है कि उसने स्विटजरलैण्ड में शरण ले ली है।

हत्या का आरोप

आनन्द मार्ग के प्रमुख प्रभात रंजन सरकार और उनके सात सहयोगियों पर हत्या का षड्यन्त्र रचने और बिहार के सिंहभूम जिले के विभिन्न स्थानों पर छः अवधूतों की हत्या करने का आरोप लगाया गया।

आरोपपत्र में कहा गया है कि 'सरकार' का इरादा था कि केन्द्र सरकार को अगर सम्भव हो तो संसदीय तरीकों से उखाड़ फैंका जाए

और जरूरी हो तो हिंसक उपाय अपनाए जाएं । इन इरादों को पूरा करने के लिए वेतनधारी कार्यकर्ता नियुक्त किए गए ।

इस्तगासे के अनुसार, सरकार ने तीन अवधूतों-मृत्युंजयानन्द, शुभानन्द और मुषमितानन्द की हत्या करने के लिए एक दल बनाया। इन्होंने सरकार की आध्यात्मिक शक्तियों के प्रति सन्देह व्यक्त किया था और मार्ग को ठोकर मार दी थी । बाद में इन अवधूतों को 3-4-1970 की रात को विश्वासपात्र अवधूत सत्यानन्द, माधवानन्द और सम्बोधानन्द मार्ग की एक जीप में बिठा कर घने जंगलों में ले गए और तीनों को पेड़ों से बांध कर उन्हें चाकुओं से गोद गोद कर उनके प्राण निकाल लिए ।

कातिल अवधूतों में से एक माधवानन्द ने न्यायाधीश के सामने जुर्म कबूल कर लिया । माधवानन्द ने कहा कि वह 18 अवधूतों के खून से हाथ रंग चुका है । उसके बयान के अनुसार आंतरिक विद्रोह को दबाने के लिए आनन्दमूर्ति ने अनेक कातिल दस्ते बना रखे थे ।

इकबाली गवाह माधवानन्द ने जून, 1975 में छः विद्रोही सदस्यों की बर्बरतम और पैशाचिक हत्या का विशेष न्यायिक दण्डाधिकारी श्री एस० एन० गुप्ता के सामने जेल में जो वर्णन किया गया वह बहुत ही रोमांचकारी है ।

दो अन्य, सम्बोधानन्द और तापस कुमार बनर्जी को भी इस हत्या काण्ड में शामिल बताया गया, वे पुलिस की आंखों में धूल झोंक कर भाग गए और उन्हें फरार घोषित कर दिया गया ।

मार्ग अध्यक्ष ने सभी पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के स्थानान्तरण और नियुक्तियों के जबानी हुक्म दिए, जिन्हें वह जरा सी गलती पर बैंतों से पीटता था । उन्हें नंगा करके पीटना और बाल पकड़ कर घसीटना सजा के तरीके थे ।

माधवानन्द ने कहा कि प्रभात रंजन ने यह खास हिदायत दी थीं कि जिन सात अवधूतों ने विद्रोह किया है उनका दुनिया से नामो निशान मिटा दिया जाए ।

इकबाली गवाह के अनुसार विद्रोहियों की हत्या की साजिश 28 जुलाई, 1970 की रात को टाटा नगर में टिस्को बंगले में प्रभात रंजन सरकार की मौजूदगी में की गई । जो पिछलग्गू वहां इकट्ठे हुए थे, उनसे कहा गया कि वे भगोड़ों द्वारा पश्चिम बंगाल में चलाए गए शिशु निकेतन को तहस-नहस कर दें और मुसीबत पड़ने पर पुलिस सुपरिटेंडेंट, जमशेदपुर के अखोरी हिमाचल प्रसाद से मदद लें, जो आनन्द मार्ग का आचार्य था। बाबा के आदेश पर तपेश्वरानन्द को यंत्रणा देने का निश्चय किया गया। इसके लिए बाबा ने स्वयं चार प्रकार की यातनाएं निश्चित कीं ।

अमानवीय यातनाएं

अमानवीय यातनाओं का वर्णन करते हुए माधवानन्द ने अदालत को बताया कि पहले तो एक छड़ी द्वारा अपराधी के पेट पर चोट की जाती थी, अगर तब भी बदनसीब झुके नहीं तो उसके लिंग को पकड़ कर खींचा जाता और उस पर लकड़ी के डंडे से प्रहार किया जाता। फिर. दोनों ओर से पसलियों के नीचे डंडी से दबाया जाता । अगर सारे हथकंडे असफल हो जाएं तो तपेश्वरानन्द की गुदा में लोहे का एक सरिया घुमा कर उससे राज उगलवाने थे ।

टिस्को बंगले के एक हिस्से में बेचारे तपेश्वरानन्द को यह सब नारकीय पीड़ाऐं एक-एक करके सहनी पड़ीं। लेकिन तीसरी सीढ़ी पर आकर वह सहन न कर सका और उसने सब कुछ उगल दिया ।

अन्त में तपेश्वरानन्द ने अपने जल्लाद साथियों से कहा कि उसे अपने गुनाहों की माफी मांगने के लिए आनन्दमूर्ति के सामने पेश किया जाए । सरकार ने उसे मिलने की इजाजत दी लेकिन रहम की अपील खारिज कर दी । गवाह ने कहा कि तपेश्वरानन्द के साथ जो कुछ भी हुआ मैं उसमें भागीदार था ।

तपेश्वरानन्द को फिर उसी कमरे में ले जाया गया, जहां उसकी बह गति बनी और सरकार ने टिस्को में उपस्थित सभी अवधूतों को बुलाया और उनके साथ उसकी हत्या के बारे में सलाह की। उसने एक अन्य अभियुक्त सत्यानन्द को कहा कि वह कलकत्ता जाए और वहां से छः भगोड़े अवधूतों को लेकर आए।

29 जुलाई को रात के 11 बजे माधवानन्द, उमेशानन्द, सम्बोधानन्द और तपस कुमार बनर्जी, दो मोटर साइकिलों पर टिस्को बंगले से तपेश्वरानन्द को लेकर निकले। उसे बताया गया कि उसे रांची ले जाया जा रहा है जहां 'बाबा' हैं और वहीं उसे क्षमादान दिया जाएगा। इस पर वह राजी हो गया।

जब वे घने जंगल में पहुंचे तो उन्होंने तपेश्वरानन्द से कहा कि आनन्दमूर्ति से मिलने से पहले कापालिक पूजा करनी है और उसे शपथ लेनी होगी। आनन्द मार्ग के अनुष्ठानों के अनुसार शपथ लेने वाले व्यक्ति को पेड़ के तने से बांधा जाता था। तपेश्वरानन्द राजी हो गया। इसके पहले उसे नंगा कर दिया गया था।

जैसे ही उसे बांधा गया माधवानन्द ने पीछे से उसका मुंह भींच लिया और तपसकुमार बनर्जी ने धड़ाधड़ छुरे घोंपने शुरू कर दिए। यह निश्चित हो जाने पर कि तपेश्वरानन्द के प्राण पखेरू उड़ चुके हैं सम्बोधानन्द ने उसका गला काट दिया। इसके बाद वे रफूचक्कर हो गए।

तीन और भगोड़ों मृत्युंजयानन्द, सुपमितानन्द और सुधानन्द को भी कत्ल करने का षड्यन्त्र था। इकबाली गवाह के अनुसार यह साजिश 1 अगस्त 1970 को श्रीमती गीता राय के घर की गई, जो पश्चिम बंगाल में आनन्दमार्ग की सल्किमा शाखा की महिला संगठन की अधिष्ठात्री थी।

सत्यानन्द, जिसे इस काम के लिए पहले भेजा गया था वह भी मौजूद था। लेकिन वह बीमारी का बहाना करके अपराध करने से बच गया

और उसने अन्य साथियों के नाम सुझाए । वे थे पवित्र कुमार, वरुण कुमार, और सत्येन सरकार आखिरी व्यक्ति अंशकालिक कार्यकर्ता था ।

इन तीन भगोड़ों से भी यही बहाना बनाया गया कि उन्हें बाबा के सामने क्षमा के लिए रांची ले जाया जा रहा है । उन्हें 3 अगस्त को प्रातः टाटा नगर के गरदा प्राइमरी स्कूल पहुंचा दिया गया ।

वहां से तीनों विद्रोहियों को टाटा नगर और रांची के बीच के घने जंगलों में ले जा कर जान से मार डाला गया । उन्हें एक-एक करके जीप में बैठा कर कसम उठाने के नाम पर बियाबान में ले जाया गया, पेड़ों से कस कर बांध दिया गया और तीन स्वयंसेवकों पवित्र कुमार, वरुण कुमार और सत्येन सरकार ने छुरों से उनका काम तमाम कर दिया ।

माधवानन्द ने कहा जब वरुण कुमार शुभानन्द की गर्दन पर छुरा खींच कर मार रहा था तो उसका हाथ माधवानन्द के पंजे पर पड़ा और उसकी तीन उंगलियां कट गई । ऐसा तब हुआ जब, माधवानन्द ने शुभानन्द की गर्दन जमाने के लिए अपना हाथ डाला क्योंकि वह छुरे के वार से बचने के लिए इधर उधर गर्दन घुमा रहा था । उसने जज को अपनी कटी उंगलियां भी दिखाई ।

माधवानन्द ने अदालत में कहा :—

"चार हत्या-काण्डों के बाद मैं इस पाप कर्म से उकता गया" और आनन्दमूर्ति स प्रार्थना की कि दो अन्य भगोड़ों जपेश्वरानन्द और अमूल्य कुमार को मुक्त कर दिया जाए । लेकिन पिशाच सरकार न माना । तब मेरे लिए उन अभागों के वध के सिवा कोई चारा न था ।

ऐसा करने से पूर्व सर्वेश्वरानन्द ने उसे बताया कि बाबा ने नई हिदायतें जारी की हैं कि लाशों को कैसे ठिकाने लगाया जाए । ये हिदायतें थीं—पैट्रोल से जला कर उन्हें विकृत कर दिया जाए, फिर नदी में फैंक दिया जाए, लाश के धड़ से सिर अलग कर दिया जाए और उसे

नदी में बहा दिया जाए, और सिर को कहीं जमीन में गाड़ दिया जाए। ये हिदायतें इसलिए जारी की गई थीं क्योंकि चारों लाशें पहचानी जा सकती थीं।

इन हिदायतों के समय 7 अगस्त, 1970 की रात को माधवानन्द और उसके साथियों से यह भी कहा गया कि इस बार जपेश्वरानन्द के साथ प्रज्ञानानन्द नामक एक और सन्यासी की भी 24 घण्टे के अन्दर हत्या करनी है।

8 अगस्त, 1970 को शाम 4 बजे माधवानन्द, सम्बोधानन्द और शंकरानन्द उन बदनसीबों के साथ रांची से रवाना हुए और 5 बजे शाम तक 35 मील दूर एक आदिवासी कल्याण केन्द्र, आनन्द शिला पहुंचे।

यह निश्चित किया गया कि जपेश्वरानन्द को लेकर सम्बोधानन्द आनन्दपीठ रवाना हो, जो आनन्द शिला से 10 मील आगे आनन्दमार्ग का एक और केन्द्र है और ब्रह्मदेव शर्मा की मदद से उसे खत्म कर दे। वे रवाना हुए।

माधवानन्द और शंकरानन्द, जपेश्वरानन्द को लेकर चले। रात के 9 बजे घने जंगल में जपेश्वरानन्द को मार्ग के ढंग से शपथ लेने के लिए तैयार किया गया। उसे नग्नावस्था में वृक्ष से बांधा गया। माधवानन्द ने उसके मुंह और नाक पर कपड़ा ठूंसा और शंकरानन्द ने एक रस्सी से उसका गला घोंट दिया। लाश को एक नदी के किनारे ले जाकर शंकरानन्द ने उसका गला काट दिया, धड़ को बहा दिया गया और सिर जमीन में दबा दिया गया।

छठा भगोड़ा था, आचार्य अमूल्य कुमार, उसे 15 अगस्त 1970 को सिंहभूम जिले के लारा जंगल में मारा गया। उसका चेहरा पैट्रोल से इस तरह झुलसा दिया गया कि पहचाना ना जा सके।

इकबाली गवाह माधवानन्द की हत्या के दो प्रयत्न किए गए। सौभाग्य से वह बच गया। सम्बंधी जांच पूरी हो चुकी है और आनन्दमूर्ति पर सैशन अदालत में मुकदमा चलाया जाएगा।

राजनीतिक हत्याएँ

प्रभात रंजन सरकार की गिरफ्तारी से उत्पन्न परिस्थितियों के बाद योजना तैयार करने के लिए 1973 में प्रोवैस्व मार्गियों का एक सम्मेलन काठमाण्डू में हुआ। इस सम्मेलन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण महिला ने भाग लिया। वह थी, जुडी माकल, जो हार्वर्ड की विद्वान थी और जिसने मनीला में आनन्द मार्ग में प्रवेश किया था। प्रभात रंजन के दूत अवधूत विमलानन्द के कहने पर, जो फ़िलीपीन्स की यात्रा पर गया हुआ था, वह 1969 में भारत आयी और यहीं रुक गई। बाद में इसके आनन्दमूर्ति के साथ घनिष्ट सम्बन्ध हो गए और यह माधुरी बन गई।

'माधुरी' अब कहां है इसका सही पता नहीं है। लेकिन यह बे सिर पैर की बात नहीं है कि इस औरत के अमरीका की कुख्यात एजेंसी के साथ ताल्लुक हो सकते हैं। हां इतना जरूर पता चला है कि हांगकांग और अमरीका के कुछ बड़े शहरों से यह नागिन भारत सरकार के विरुद्ध जम कर जहर उगल रही है।

यह बात तो सभी जान गए है कि आनन्दमार्गियों ने भूतपूर्व रेल मन्त्री श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या की, जिससे सरकार और जनता में भय फ़ैल जाए और आनन्दमूर्ति की गिरफ्तारी के बाद बचे खुचे मार्गियों में मची भगदड़ को रोका जा सके। पटना के स्पेशल मजिस्ट्रेट के सामने केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने 12 नवम्बर को आरोप पत्र पेश किया जिसमें इस हत्या के लिए 12 मार्गियों पर आरोप लगाया गया है।

मिश्र की हत्या का षड़यन्त्र भागलपुर जिले के त्रिमोहन गांव में रचा गया, जहां अवधूत माधवानन्द को भी ठिकाने लगाने का फ़ैसला किया गया था। इसके अलावा बिहार के तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्री गफ़ूर और आनन्दमार्ग के मामलों से सम्बन्धित सरकारी अधिकारियों की हत्या की भी योजना बनाई थी।

हरेक षड़यन्त्रकारी को अलग अलग काम सौंपा गया। माधवानन्द की हत्या का काम विनयानन्द के हवाले किया गया, विश्वेश्वरानन्द श्री गफ़ूर को मारने के लिए तैयार किया गया और आरतेशानन्द तथा सुदेवानन्द को अधिकारियों को मारने का काम सौंपा गया।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार आनन्दमार्ग के नापाक इरादों के शिकार जो अधिकारी होते उनमें केन्द्रीय जांच ब्यूरो के निदेशक हिंगोरानी, पटना जेल के सुपरिंटेंडेंट भरत प्रसाद सिंह और जेल के डाक्टर रहमान भी थे।

सारा षड्यन्त्र प्रभात रंजन के जेल से भेजे निर्देश के अनुसार रचा गया था, जिसमें उसने अपने अनुयायियों को स्वयं की जेल से मुक्ति के लिए धैर्य दिखाने और शत्रुओं का विनाश किए बिना चैन से न बैठने के लिए ललकारा था।

जुलाई, 1973 में पटना में एक "क्रांतिकारी गुट" बनाया गया और इसमें विनयानन्द, विश्वेश्वरानन्द और दूसरे धूर्त रखे गए। इन धूर्त अवधूतों ने अपने सिर मुंडा डाले, दाढ़ी मूंछ कटवा दीं और अपने नाम विनय और जगदीश रख लिए।

एक अन्य अभियुक्त रामाश्रय प्रसाद ने पांच बमों का जुगाड़ किया। इन लोगों में सन्तोषानन्द, सुदेवानन्द, अर्तेशानन्द और रामकुमार सिंह भी शामिल हो गए, जिन्हें गोला बारूद और हथियार जुटाने का काम सौंपा गया।

भागलपुर जिले के त्रिमोहन गांव में एक बैठक बुलाई गई, जिसमें अलग अलग सदस्यों को काम सौंपे गए। विनयानन्द ने गवाह माधवानन्द को खत्म करने के लिए पटना कचहरी में उस पर हथगोला फेंका। सौभाग्य से वह फटा नहीं। उसने गंगा में कूद कर रफू चक्कर होने की कोशिश की लेकिन पुलिस ने उसे धर पकड़ा।

दिसम्बर, 1973 और जनवरी 1974 में श्री अब्दुल गफूर पर पटना के दो होटलों में असफल हमले किए गए।

इस बीच सन्तोषानन्द और सुदेवानन्द ने नकली नामों—(विनोद और रामचन्द्र) की आड़ में रह कर पश्चिम बंगाल के अभियुक्त राम नगीना प्रसाद से हथगोले प्राप्त कर लिए ।

जुलाई 1974 में अभियुक्त विक्रम तीन हथगोले लाया और सन्तोषानन्द को बुद्धिश्वरानन्द को सौंपने के लिए दिए, जो मर चुका है ।

इस तरह हथियार संग्रह का काम चलता रहा । षड्यंत्र का उद्देश्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों की हत्याएं कर के आतंक का दौर पैदा करना था, षड्यंत्रकारियों का एक शिकार, श्री ललित नारायन मिश्र बने, जो न सिर्फ केन्द्र के महत्वपूर्ण मंत्री थे बल्कि राज्य सरकार में भी जिनका काफी प्रभाव था । श्री मिश्र की हत्या का उद्देश्य यह था कि आनन्दमूर्ति असल में बीभत्स मूर्ति को, सरकार डर कर रिहा कर दे ।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए षडयंत्रकारियों ने सारी ताकत लगा दी और ललित बाबू की हत्या की योजना बना ली, जिन्हें 2 जनवरी, 1975 को समस्तीपुर में मुज्जफरपुर-समस्तीपुर बड़ी रेल लाइन का उद्-घाटन करना था । उद्घाटन समारोह प्लेटफार्म नं० 3 पर आयोजित किया गया । इस विशाल समारोह में अतिथियों का आगमन निमंत्रण पत्रों के आधार पर हुआ ।

अभियुक्त रंजन दिवेदी, ने जो आनन्दमार्ग का सक्रिय कार्यकर्ता था, पहली जनवरी को सन्तोषानन्द और सुदेवानन्द के साथ समस्तीपुर पहुंचा उसने किसी तरह निमंत्रण पत्रों का हिसाब बैठा लिया । उसने प्लेटफार्म नं० 2 तक तीनों के प्रवेश की गोटी फिट कर ली । अभियुक्त विक्रम पहले ही समस्तीपुर पहुंच चुका था । सन्तोषानन्द और सुदेवानन्द तीन हथगोले लिए हुए थे ।

वहां निमंत्रण पत्रों के सहारे वे प्लेट फार्म नं० 3 पर ललित बाबू के आगमन से पूर्व पहुंच गए । इनमें से हरेक के पास हथगोला था ।

जब ललित बाबू को लेकर विशेष गाड़ी वहां पहुंची तो तीनों मुलज़िम यानी सन्तोषानन्द, सुदेवानन्द और विक्रम किसी तरह मंच के पास पहुंचने में सफल हो गए और सुदेवानन्द ने योजनानुसार भरा हुआ हथगोला, रेल मंत्री के भाषण के तुरन्त बाद मंच पर दे मारा ।

पकड़े जाने से बचने के लिए विक्रम ने भागते समय बचा हुआ हथगोला प्लेटफार्म नं० 3 के पास रेल लाइन पर छोड़ दिया ।

वह बाद में समस्तीपुर में एक असिस्टेंट अकाउन्ट्स आफीसर महादेव साहू के नाबालिग पुत्र राजेन्द्र साहू के हाथ लग गया । बच्चा इसे खेल खेल में अपने घर ले गया जहां वह अचानक फट गया और वह लड़का और उसका चचेरा भाई घायल हो गए ।

अभियुक्त सन्तोषानन्द, सुदेवानन्द, और विक्रम चुपचाप खिसक गए पर बाद में पुलिस के फंदे में फंस गए ।

जिन आनन्दमार्गियों पर मुकदमा चल रहा है वे हैं :—सन्तोषानन्द, सुदेवानन्द, विक्रम, रंजन द्विवेदी, रामनगीना प्रसाद, अर्तेशानन्द, विनयानन्द, रामरूप, गोपालजी, विशेश्वरानन्द, राम कुमार सिंह और रामश्रय प्रसाद सिंह ।

प्रधान न्यायाधीश पर कातिलाना हमला

राष्ट्रीय आधार पर एक और पैशाचिक प्रयास हुआ । उच्चतम न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश श्री ए० एन० रे पर कातिलाना हमला । जांच-पड़ताल से पता चला है कि इस विफल योजना में भी आनन्दमार्ग का हाथ था । इस सिलसिले में उच्चतम न्यायालय के एक वकील और तीन कट्टर आनन्दमार्गी पकड़े गए हैं । यह घटना 20 मार्च, 1975 की है । 2 अगस्त, 1975 को गृह राज्य मंत्री श्री ओम मेहता ने राज्य सभा में यह बताया, जब वे इस मामले जांच ब्यूरो द्वारा छान बीन पर एक बयान दे रहे थे ।

श्री ओम मेहता ने उच्चतम न्यायालय के उस वकील का नाम रंजन द्विवेदी बताया जिसने प्रधान न्यायाधीश की पहचान अभियुक्तों को कराई । द्विवेदी की पत्नी एक अमरीकी महिला है जो आजकल भारत में नहीं है ।

श्री मेहता ने कहा कि प्रधान न्यायाधीश पर किए गए हमले और ललित बाबू की हत्या की घटनाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। लेकिन उन्होंने इससे आगे बताने से इंकार कर दिया क्योंकि अभी समस्तीपुर काण्ड एक आयोग के विचाराधीन है ।

उसी दिन लोक सभा में भी एक बयान में श्री ओम मेहता ने कहा कि जांच ब्यूरो ने जबानी और ठोस सबूत इस बारे में इकट्ठा कर लिए हैं कि इस कुकृत्य में इन तीनों और कुछ दूसरों का हाथ है । अब आरोप पत्र दाखिल करा दिया गया है ।

श्री मेहता ने कहा कि ये आनन्दमार्गी थे सन्तोषानन्द, सुदेवानन्द और विक्रम । पहले दो ने एक-एक हथगोला कार में फैंका और तीसरा मौके पर उनके साथ था । उल्लेखनीय है कि सन्तोषानन्द राजधानी से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक "प्रउत" का सम्पादक है ।

श्री ओम मेहता ने कहा कि इस उत्पात का षड्यंत्र किसी समय मार्च के शुरू में कट्टर आनन्दमार्गियों के गिरोह ने रचा जिनमें प्रमुख थे सन्तोषानन्द, सुदेवानन्द और विक्रम। हथगोला फैंकने के बाद सन्तोषानन्द और सुदेवानन्द एक कमरे में कुछ समय तक ठहरे जो नकली नामों से लिया हुआ था । वहां रहते सन्तोषानन्द ने हिन्दी और अंग्रेजी में कुछ पत्र लिखे जो विभिन्न पतों पर भेजे गए, उनमें से एक धमकी भरा पत्र प्रधान न्यायाधीश को भी भेजा गया था ।